हिन्दी सिनेमा के गज़लों में सांगीतिक तत्वों का प्रयोग

देवेन्द्र कुमार गुप्ता
शोध छात्र,
नेट, जे.आर.एफ. (आर.जी.एन.एफ)
संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

सारांश

ग़ज़ल एक ईरानी सांगीतिक विद्या है जिसका आगमन मध्यकाल में, भारत में हुआ। ग़ज़ले अक्सर श्रृंगारिक होती है, इसमें प्यार, मोहब्बत और इससे जुड़ी तमाम रूहानियत भरी बातों का इज़हार होता है और कभी–कभी ग़ज़ले संवेदनशील भी होती है जिसमें देश, समाज और परिस्थितियों की भी बाते होती है। ग़ज़लों में शेर, नज़्म आदि गाये जाते हैं। यह एक भाव प्रधान गायिकी हैं जो उर्दू, फारसी और वर्तमान में हिन्दी में भी गायी जाती हैं। हिन्दी सिनेमा में ग़ज़लों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया गया है। ग़ज़लों की गायिकी में कई सांगीतिक तत्वों के प्रयोग किए जाते हैं जैसे राग, ताल, छन्द, लय, भाव इत्यादि। ग़ज़ल किसी ना किसी राग पर आधारित होते है। अलग–अलग तालों में ग़ज़लों की प्रस्तुति होती है। ग़ज़लों में छन्द का बहुत महत्व है। ग़ज़ल वैसे तो अक्सर मध्य लय में गायी जाती है परन्तु कभी–कभी यह विलम्बित और द्रुत लय में भी गायी जाती है। ग़ज़लों की गायकी भावप्रधान मानी जाती है। इसमें सबसे ज्यादा महत्व उच्चारण का माना जाता है क्योंकि इसके अल्फाज़ अधिकतर उर्दू, फारसी में होते हैं। अतः इस दृष्टि से ग़ज़लों के तमाम सांगीतिक तत्वों और उसके प्रयोग पर शूक्ष्म और विस्तृत आख्या प्रस्तुत शोध पत्र में किया गया है।

शब्दकुंजीः

संगीत, गायकी, ग़ज़ल, सांगीतिक तत्व, भोर, भाव प्रधान, हिंदी सिनेमा,

संगीत में गायकी की अनेक विधाएं हैं। इन विधाओं में से ग़ज़ल मन के अधिक निकट है। ग़ज़ल गायकी में शेरो–शायरी को पेश करने का अन्दाज, रूह तक छू जाने वाली स्वर लहरिया और मन को स्वतः ही झंकृत कर जाने वाले वाद्य वादन का समन्वय, ये सभी तत्व बरबस ही अपने ओर आकर्षित करते हैं।

हिन्दी सिनेमा में ग़ज़लों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है।मेरा ग़ज़लों से पहला परिचय फिल्मी ग़ज़ल "होशवाला को खबर क्या" स हुआ। ग़ज़ला मे किन–किन सांगीतिक तत्वों का प्रयोग किया गया है, यह विचार मेरे मन में उठा । इस तरह से हिन्दी' सिनेमा के ग़ज़लों में सांगीतिक तत्वों का प्रयोग विषय का प्रस्फुटन हुआ। ग़ज़ल की परिभाषा हिन्दी

के समालोचक डॉ0 नागेन्द्र के शब्दों में – ग़ज़ल, काव्य का सर्वाधिक सरस भेद है, उसका स्थायी भाव प्रेम है, जिस में रहस्यानुमूति, मस्ती, धार्मिक विद्रोह आदि भावनाए संचारी रूप में ओत–प्रोत रहती हैं।

ग़ज़ल अरबी साहित्य की प्रसिद्ध विधा है। बाद में फारसी, उर्दू, नेपाली, और हिन्दी साहित्य में भी बेहद लोकप्रिय हुई। संगीत के क्षेत्र में ग़ज़ल गाने के लिए इरानी और भारतीय संगीत के मिश्रण से अलग एक शैली निर्मित हुई। ग़ज़ल मूलतः अरबी भाषा से है जिसका अर्थ है औरतो से या औरतों के बारे में बात करना। ग़ज़ल अरबी भाषा का स्त्रीलिंग शब्द है। ग़ज़ल बहर और वजन के अनुसार लिखे शेरो का समूह है। ग़ज़ल की पैदाइश फारस के लोकसंगीत से हुई। इसके पहले शेर को 'मतला' कहते है। ग़ज़ल के अंतिम शेर को 'मक़्ता' कहते है। मक्ते में सामान्यतः शायर अपना नाम लिखता है। ग़ज़लो मे शेरो की विषम (3,5,7) संख्या होती है। ग़ज़ल मे 5 से लेकर 25 शेर हो सकते है। कभी–कभी एक से अधिक शेर मिलकर अर्थ देते हैं और ऐसे शेर 'कताबंद' कहलाते हैं।

ग़ज़ल के शेर में तुकांत बंद को 'काफिया' कहा जाता है। ग़ज़ल के सबसे अच्छे शेर को 'शाहे बैत' कहा जाता है। ग़ज़लों के ऐसे संग्रह को 'दीवान' कहते हैं। उर्दू का पहला दीवान शायर 'कुली कुतुबशाह' है। ग़ज़लों की तमाम ख़ासियत को फिल्मों में सम्पूर्णता के साथ पेश किया गया है। जिसे दर्शक/ श्रोता सुनकर अनायास ही दाद देने लगता है।

सिनेमा का उद्भव सिनेटोग्राफ से हुआ है। सिनेमा का हिन्दी रूपान्तरण 'चलचित्र' है। हिन्दी सिनेमा का उद्भव सन् 1913 ई0 मे पहली मूक फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' से हुआ। इस फिल्म के पश्चात् निर्देशक आर्देश एम0 इरानी द्वारा निर्देशित पहली सवाक फिल्म 'आलमआरा' 1931 में बनी। हिन्दी सिनेमा का पहला गाना ''दे दे खुदा के नाम पर ताकत है गर देने की'' बना। पहले हिन्दी सिनेमा के गायक डब्ल्यू. एम. खान थे।

अनिल बिस्वास जैसे कुछ संगीतकारों ने पहली बार कोरस के रूप मे सामूहिक स्वर को अभिव्यक्ति में जगह दी। शुरूआती दौर मे अधिक वाद्य यंत्रो का प्रयोग नही किया जाता था। सिनेमा के सबसे पहले गाने में मात्र एक तबला और एक हार्मोनियम का प्रयोग किया गया था। हिन्दी सिनेमा जन–जन तक पहुॅचने का माध्यम है यही कारण है कि सिनेमा के अधिकतर गीत लोकप्रिय हो जाते है।

ग़ज़लो का जन्म बहमनी सल्तनत के समय दक्कन में हुआ। भाषा का नाम रेख्ता 'गिरा–पडा' पड़ गया। भारत में ग़ज़लों का जनक 'अमीर खुसरो' का माना जाता है। ग़ज़लों में 'इश्क मिजाजी' और इश्क हकाकी' जैसे शब्दों का प्रयोग अलग–अलग अर्थो के लिए किया जाता है।

फारसी ग़ज़ल में प्रेमी को सादिक (साधक) और प्रेमिका को 'माबूद' (ब्रम्ह) का दर्जा मिला है। ग़ज़लो के कई प्रकार होते है' उनमे से कुछ अग्रलिखित है–

तुकान्त के आधार पर ग़ज़ल दो प्रकार के होते हैं–

1. मुकद्दस ग़ज़लें– इस ग़ज़ल के अश आरो में रफीक एवं काफिया का ध्यान रखा जाता है।
2. मुकफ्फा ग़ज़लें–इस ग़ज़ल के अशयारो में केवल काफिया का ध्यान रखा जाता है। भाव के आधार पर दो प्रकार की ग़ज़लें होती है–

1. मुसल्सल
2. गैरमुसल्सल

इसके अतिरिक्त ग़ज़ल के और वाक्यों का प्रयोग किया जाता है पहला (1) तगज्जुल – नारी के सौन्दर्य वर्णन के लिए प्रयोग किया जाता है। (2) तसव्वुफ – यह ग़ज़लों मे सर्वोच्च माना जाता है। प्रेमी अपने प्रिय ब्रम्ह के प्रति किसी भी लाकिक माध्यम को लेकर भावना प्रकट करता है। हिन्दी सिनेमा में ग़ज़ल गायन की शुरूआत 1930 ई0 मे हुई। फिल्मों में ग़ज़ल गायकी की शुरूआत के0एल0 सहगल से हुई। उनका एक मशहूर ग़ज़ल जो फिल्म में फिल्माया गया– 'लायी हयात आए कज़ा ल चली चले'। इसी समय के एक अन्य मशह्र गायक उस्ताद बरकत अली खॉ थे वह शास्त्रीय संगीत के मूर्धन्य कलाकार थे। उनकी ग़ज़ल–हस्ती अपनी हुबाब सी है। इस दौर के ग़ज़ल के अन्य कलाकारों के नाम निम्न है – मास्टर मदन, सी0 एच0 आत्मा, और हबीब बली मोहम्मद थे।

1914–1974 मे अख़्तरी बाई ओर बेगम अख्तर ग़ज़ल गायकी में मशहूर थीं। उन्होने शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत में ठुमरी व दादरा भी गाया। बेगम अख्तर को मलिका–ए–ग़ज़ल कहा जाता था। उनकी एक प्रसिद्ध ग़ज़ल है – 'कुछ तो दुनिया की इनायत ने दिल तोड़ दिया' ।

बेगम अख़्तर से बहुत महिला गायिकाओं ने प्रेरणा ली। कुछ प्रमुख प्रसिद्ध ग़ज़ल गायिकाएं जिनके नाम निम्न हैं– मलिका पुखराज, इकबाल बानो, एवं फरीदा ख़ानम। 1960–70 में फिल्मों में ग़ज़लो का गायन भारत और पाकिस्तान के गायकों द्वारा होने लगा जिनमे लता मंगेशकर, मुकेश, आशा भोसले, एवं मेहंदी हसन प्रमुख है।

1970 ई0 मे जगजीत सिंह एवं चित्रा सिंह की ग़ज़ल एच0एम0वी0 से रिलीज हुई। जगजीत सिंह के ग़ज़ल में पारम्पारिक वादयों के स्थान पर संतूर ,गिटार, सिन्थेसाइज़र और वायलिन का प्रयोग किया गया। उनकी ग़ज़लो में संगीत साधारण व भावपूर्ण रहा। उनकी ग़ज़लोंमे काव्य साधारण व जीवन से जुड़ा होता था। जगजीत एवं चित्रा जी का डुएट–'हम तो हैं परदेश मे, देश में निकला होगा चांद'। लोगो के बीच बहुत अधिक मकबूल हुआ। सिनेमा के ग़ज़लों मे कई तत्व प्रयोग किए जाते हैं। स्वर, पद, ताल, के साथ–साथ प्रयोक्ता की भूमिका प्रमुख है।

ग़ज़लों मे संगीत के साथ ही साथ ग़ज़ल के बोल भी बहुत महत्व रखते है। कुछ प्रमुख ग़ज़लकारों के नाम है – मिर्ज़ाग़ालिब, मीरत की मीर, फिराख गोरखपुरी, फैज़ अहमद फैज़, दुश्यन्त कुमार, राहत इन्दौरी, निदा फाज़ली, बसीम बरेलवी, कुंवर बेचैन, अंजुम रहबर इत्यादि।

बहुत अच्छे शेर हो लेकिन श्रोता तक सही भाव द्वारा पहुंच ना सके तो यह असफलता गायक की मानी जायेगी क्योंकि ग़ज़ल भाव प्रधान गायिकी है। भावों की गहराई ग़ज़लों में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कुछ प्रमुख ग़ज़ल गायको के नाम जिन्होने फिल्मों मे अविस्मरणीय ग़ज़ल गाए– जगजीत सिंह, बेगम अख़्तर, गुलाम अली, मेंहदी हसन, चंदनदास, हरिहरन, मुन्नी बेगम, भूपेन्द्र सिंह, पिनाज मसानी, पंकज उधास, इत्यादि।

किसी भी ग़ज़ल का निर्माण संगीतकार करता है वह गज़लकार से संगीत के अनुरूप बोल लिखवाता है और उचित भाव वाले गायकों से गवाता है। ऐसे ही कुछ प्रमुख संगीतकारों के नाम है – कुलदीप सिंह, मदन मोहन, एस0 एन0 त्रिपाठी, भांकर जयकिशन, ओ0पी0 नय्यर, रौशन, बप्पी लहरी, इत्यादि।

ग़ज़ल गायकी में वाद्ययंत्रो की सीमा निश्चित है परन्तु अलग–अलग स्थिति मे वादय यंत्र घटते–बढ़ते रहते हैं। ग़ज़ल के शुरूआती दौर में ग़ज़ल हार्मोनियम और तबले पर ही गया जाता था और वाद्य यंत्रो का प्रयोग नही किया जाता था, परन्तु समय बदलने के साथ–साथ वाद्य यंत्र बढते गए। कुछ प्रमुख वाद्य यत्रो के नाम–
हार्मोनियम, संतूर, सारंगी, सितार, तबला, और रबाब इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। जगजीत सिंह जी ने अपने ग़ज़लो मे वायलिन, गिटार, तबला, ऑक्टोपैड का प्रयोग अधिक किया। ग़ज़लो मे प्रयुक्त होने वाले कुछ प्रमुख ताल है– दादरा, कहरवा और रूपक ताल। हिन्दी सिनेमा में ग़ज़लो का प्रयोग बहुत हुआ। कुछ ग़ज़लों के ताल में परिवर्धन किया गया जैसे– जगजीत सिंह द्वारा गाया गया ग़ज़ल 'सरकती जायें है रूख़ से नकाब आहिस्ता आहिस्ता'। में कहरवा ताल मे परिवर्धन करके बनाया गया है।

कुछ ग़ज़लो को रागो के आधार पर बनाया गया है जैसे मोहम्मद रफी द्वारा गाया गया ग़ज़ल 'ना किसी के ऑख का नूर हूँ' मे राग शिवरंजनी का मिश्रण है। कुछ ग़ज़ल अपने बोलो के लिए प्रसिद्ध होते हैं, उनके शेर, उनकी तुकबंदी अपने मे अलग छाप छोड़ती है। जैसे–कोई सागर दिल को बहलाता नही, जिंदा हू इस तरह के ग़मे ज़िन्दगी नहीं।

प्रस्तुत है कुछ फिल्मों में फिल्मायी गई ग़ज़ले–

- यूं हसरतों के दाग मुहब्बत में धो लिए
- मेरे महबूब तुझे मेरी मोहब्बत की कसम (राग झिंझोटी)
- आह को चाहिए एक उम्र असर होने तक
- ज़िदां हूं इस तरह के ग़मे ज़िदगी नहीं
- चलते–चलते यूं ही कोई मिल गया था।
- जुस्तजू जिसकी थी
- दिले नादां तुझे
- सीने में जलन
- किसी नज़र को तेरा
- तू इस तरह से मेरी ज़िन्दगी में
- तुमको देखा तो ये खयाल आया
- कोई सागर दिल को बहलाता नही
- दिल चीज़ क्या है
- दिखाई दिए यूं
- दिल के आरमां
- झुकी झुकी सी नज़र
- मेरा कुछ सामान
- मोहब्बत अब तिजारत बन गई है।

- चिट्ठी आई है

पुस्तकों के अध्ययन से, इन्टरनेट से इकट्ठी की गई जानकारियों से, ग़ज़ल गायकों से मिलकर, लाइव कंसर्ट सुनकर, टी0वी0 रेड़ियो से मिली जानकारी एवं अपने विवेकानुसार इस विशय पर विचारणीय तथ्य है कि' हिन्दी सिनेमा के ग़ज़लो में सांगीतिक तत्वों का प्रयोग' हुआ है। इन सांगीतिक तत्वों के अभाव में ग़ज़लों की कल्पना नहीं की जा सकती है। ग़ज़लों में तमाम तत्वों का प्रयोग किया गया। ग़ज़ल मे काव्य, ताल एवं गायकी का स्थान उच्च हैं। साथ ही साथ भाव पक्ष ग़ज़ला में चार चांद लगा देता है। हिन्दी सिनेमा के ग़ज़लों मे इसी प्रकार से सांगीतिक तत्वों का प्रयोग करके ग़ज़ल बनाए गए। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हिन्दी सिनेमा में राग, ताल एवं काव्य आदि सांगीतिक तत्वों को मिलाकर एक सुरीला, मनोरंजक एवं कर्णप्रिय ग़ज़ल का निमाण किया जाता है। इन सांगीतिक तत्वों के अभाव में ग़ज़ल की कल्पना करना कठिन है।

संदर्भ ग्रंथसूचीः

1. गोस्वामी, डॉ0 सुनील, *सूफीसंगीत,* दिल्ली : अंकित पब्लिेशन, पृष्ठ 88–89
2. जौहरी, सीमा, *भारतीय चलचित्र संगीत का इतिहास,* दिल्ली : राधा पब्लिकेशन, 2012
3. शर्मा, 'सौरभ' डॉ0 इन्दु, *भारतीय फिल्म संगीत मे ताल समन्वय,* दिल्ली : कनिष्क पब्लिशर्स, 2006